कक्षा में बच्चों की मातृभाषा का प्रयोग-एक शिक्षिका के अनुभव

फील्ड-स्तर का दृष्टिकोण

लेखिका: श्रीमती रेखा राय, प्रधान पाठक - शासकीय प्राथमिक शाला गांधीनगर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मेरा नाम रेखा रॉय है, वर्तमान में मैं शासकीय प्राथमिक शाला गांधीनगर, अंबिकापुर, विकासखंड अंबिकापुर, जिला सरगुजा, छत्तीसगढ़ में प्रधान पाठक के रूप में कार्यरत हूं। मैं शिक्षा क़े क्षेत्र मे पिछले 21 वर्षों से कार्य कर रही हूँ। इस दौरान मुझे बच्चों के साथ विशेषकर छोटे बच्चों के साथ काम करने के कई अनुभव प्राप्त हुए हैं।

उन्हीं में से एक ऐसा अनुभव आपके साथ साझा करना चाहती हूँ जिसने मेरा एक भ्रम दूर किया, जिसका सीधा संबंध कक्षा में मेरे पढ़ाने के तरीके से जुड़ा था। एक शिक्षक होने के नाते हम सभी का कर्तव्य है कि हम बच्चों की पृष्ठभूमि और उनके स्तर को समझते हुए उन्हें सीखने-सिखाने के अवसर प्रदान करें। मैंने अपने अध्यापन के दौरान यह महसूस किया कि यदि हम बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान नहीं देते हैं तो हम उनके साथ अन्याय कर रहे होते हैं।

इसी से संबंधित कक्षा-1 से जुड़ा मेरा एक अनुभव है, मेरी कक्षा में कक्षा-1 व कक्षा-2 के बच्चे एक साथ बैठते हैं। कक्षा-1 में 14 एवं कक्षा-2 में 19 बच्चे हैं, इनमें से अधिकांश बच्चे पास के घुमंतु आश्रम (हॉस्टल) से मेरे स्कूल पढ़ने आते हैं। बच्चों के साथ काम करते हुए मैंने अनुभव किया कि बच्चे बहुत ही उत्साही हैं और कक्षा की गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं। कक्षा में पढ़ाते समय मेरी नजर हमेशा एक बच्चे आदर्श पर जाती जो हमेशा शांत, चुपचाप और गुमसुम सा रहता था। मुझे उसे कक्षा की गतिविधियों में शामिल करने हेतु अलग से प्रयास करने पड़ते। जब भी उससे कोई प्रश्न पूछा जाता तो आदर्श शांत रहता और सभी कार्यों में वह अपने को पीछे ही रखता था। शुरू में मुझे लगा कि अभी कक्षा-1 में आया है, धीरे-धीरे माहौल में ढल जाएगा और कुछ दिनों में बोलना शुरू करेगा। लगभग 3 महीने बीत गए पर आदर्श के व्यवहार में कोई बदलाव नहीं दिखा।

इस बीच मैंने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, जहाँ हमारे साथ बच्चों की भाषा के प्रयोग के लाभ के बारे में बताया गया। कुछ बातें मुझे बहुत ही अच्छी लगी। मुझे वहाँ आदर्श का ध्यान आया और मैंने कक्षा में बच्चों के साथ उनकी घर की भाषा सरगुजिया का प्रयोग करने का निर्णय लिया। मैं भी सरगुजिया भाषा अच्छी तरह से समझती और बोलती हूँ। प्रशिक्षण से वापस आकर मैंने कक्षा में बच्चों को सरगुजिया भाषा की कहानी की पुस्तक पर कार्य करना प्रारंभ किया।

मैंने उन्हें सरगुजिया की कहानी सुनाई, मैंने देखा कि सभी बच्चों की आँखें चमक उठी, मेरा ध्यान तो आदर्श की ओर था, मैंने अनुभव किया कि वह बड़े ही ध्यान से मेरी बातें सुन रहा था और बीच-बीच में धीमे-धीमे मुस्कुरा रहा था, जैसे उसे कहानी समझ आ रही थी। कहानी सुनाने के दौरान मैं बच्चों से कुछ प्रश्न भी पूछती, बच्चे पूरे विश्वास के साथ उनका जवाब देते। आदर्श भी कुछ बातें बोल रहा था।

मैंने सीधे आदर्श से सरगुजिया में एक प्रश्न पूछा **'ठंड के दिनों में जब हम सुबह-सुबह बाहर निकलते हैं तो धुंधला सा छाया रहता है उसे हम सरगुजिया में क्या कहते हैं?'** आदर्श ने तपाक से जवाब दिया कि "मैडम हमर गांव कती बिहाने उठे ले कुहासा दिखथे, हमन कुहासा छईस हे कहथी।" कहानी को पूरा करने के दौरान मैंने आदर्श के कुछ और प्रश्न पूछे, जिनका जवाब उसने अपनी भाषा में अपने अनुभवों और अपने आस-पास की दुनिया को जोड़ते हुए पूरे विश्वास के साथ दिया।

आदर्श के जवाब सुनकर मुझे बहुत ही खुशी हुई। मुझे अपने पढ़ाने के तरीकों से जुड़े अपने ही प्रश्नों के जवाब मिले। मुझे समझ आया कि जिन तरीकों से मैं बच्चों को पढ़ा रही थी, वह शायद आदर्श के लिए उपयोगी नहीं था। मैं इस भ्रम में बच्चों को पढ़ाती रही कि कक्षा के सारे बच्चे पाठ्यपुस्तक की भाषा समझते हैं, और मैं भी कक्षा में पुस्तक की भाषा का प्रयोग करती थी। कक्षा के अनुभव ने मेरा भ्रम तोड़ा, बच्चों के चेहरे के खुशी के भाव मैं भूल नहीं पा रही थी। मुझे यह समझ आया कि बच्चों को तो भाषा पहले से ही आती है, हमें तो बस उनके साथ उस भाषा को उपयोग करने के अवसर देने की जरूरत है।

बच्चे 'कुहासा' पहले से ही जानते हैं, मुझे तो उन्हें केवल यह बताना है कि जिसे वे सरगुजिया में कुहासा कहते हैं, उसे हिन्दी में कोहरा कहा जाता है। मुझे बच्चों को कोहरा क्या है यह समझाने की जरूरत ही नहीं रही। इस अनुभव ने मुझे यह एहसास कराया कि "जब हम कक्षा में बच्चों की भाषा को जगह नहीं देते हैं, तो हम उन्हें एक संदेश दे रहे होते हैं कि कक्षा में उनकी जगह नहीं है।"

ऐसा भ्रम न जाने कितने शिक्षकों को होता होगा, जो अनजाने में ही बच्चों की भाषा का उपयोग न करने के कारण उनके साथ अकादमिक रूप से अन्याय करते हैं। बहुत से बच्चे इस कारण से शाला त्यागी हो जाते हैं या सीखने की उनकी गति बहुत ही धीमी होती है। एक शिक्षक होने के नाते मैं आप सभी से यह निवेदन करना चाहूंगी कि सभी साथी शिक्षक बच्चों की परिस्थिति, परिवेश, और उनकी संस्कृति को जोड़ते हुए उनके स्तर के अनुसार सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल करने का प्रयास करें।

रेखा मैडम की तरह आप भी कक्षा से जुड़े अपने अनुभव हमारे साथ साझा कर सकते हैं।

लेखिका परिचय:

श्रीमती रेखा राय शा. प्राथमिक शाला, गांधीनगर में प्रधान पाठक के पद पर पदस्थ हैं। उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का 21 वर्षों का अनुभव प्राप्त है। प्राथमिक विद्यालय के नन्हे विद्यार्थियों के साथ कार्य करना उनका प्रिय विषय है, और वह बच्चों को सिखाने के साथ-साथ स्वयं भी निरंतर सीखने के लिए उत्साहित रहती हैं।

वह जिला स्रोत समूह (DRG) के सदस्य के रूप में SCERT, रायपुर से जुड़ी हुई हैं। इस भूमिका के तहत, उन्होंने कई शिक्षक प्रशिक्षणों में सक्रिय रूप से भाग लिया है और उनका लाभ अपने जिले एवं ब्लॉक के अन्य शिक्षकों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

श्रीमती राय अपने जिले में एक उत्कृष्ट शिक्षक के रूप में जानी जाती हैं, जिनका शिक्षण बच्चों के साथ कार्य करने के नए-नए तरीकों और शैक्षणिक नवाचारों पर केंद्रित रहता है। वह अपनी शिक्षण प्रक्रिया में उपयोगी शिक्षण शास्त्र का प्रयोग करती हैं और अन्य शिक्षकों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हैं।

उनके विशेष योगदान में बच्चों के सहयोग से विभिन्न प्रकार की सहायक शिक्षण सामग्री (TLM) का निर्माण करना, जिला स्तर पर मातृभाषा में डिक्शनरी तैयार करना तथा जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET) के साथ मिलकर नवाचारी सामग्री विकसित करना शामिल है।

शिक्षण में उत्कृष्ट कार्य और समर्पण के लिए उन्हें जिला, ब्लॉक और राज्य स्तर पर कई पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्राप्त हो चुके हैं। श्रीमती रेखा राय अपने जिले में एक अत्यंत कुशल मास्टर ट्रेनर के रूप में विख्यात हैं।